अब्राहम लिंकन

[ABRAHAM LINCOLN]

19वीं सदी में विशेष रूप से यूरोप में **'राष्ट्रवाद की भावना'** की लहर चल रही थी। जर्मनी और इटली में राष्ट्रवाद की जो भावना बह रही थी, उसका प्रभाव विश्व के अन्य क्षेत्रों पर भी सकारात्मक रूप से पड़ा। इस बढ़ती हुई भावना का सीधा प्रभाव संयुक्त राज्य अमेरिका पर भी पड़ा, परन्तु इस मार्ग में सबसे बड़ी बाधा यह थी कि किस प्रकार अमेरिका में स्थापित लोकतन्त्र और उभरती हुई राष्ट्रवाद की भावना में सामंजस्य स्थापित किया जाए। दूसरी प्रमुख समस्या यह थी कि किस प्रकार संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में वैचारिक स्तर पर समानता की स्थापना की जाए। **इसके पीछे कारण यह था कि इन दोनों क्षेत्रों में स्थित राज्य, भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक विशेषताओं की दृष्टि से भिन्नताएं रखते थे।** दोनों ही क्षेत्रों की आवश्यकताएं भी एक-दूसरे से अलग प्रकार की थीं। इन विभिन्नताओं ने धीरे-धीरे दोनों क्षेत्रों के मध्य विघटनकारी रूप धारण कर लिया और इसने संघ की नींव की अवधारणा पर ही प्रहार करना आरम्भ कर दिया। **उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में इस समस्या ने काफी गम्भीर रूप धारण कर लिया।**

1858 ई. के सीनेट के चुनाव : लिंकन का प्रादुर्भाव

संयुक्त राज्य अमेरिका में 1858 ई. में सीनेट के चुनाव हुए। **अमेरिकी राजनीतिक मंच पर एक ऐसे व्यक्तित्व का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने सही अर्थों में आधुनिक संयुक्त राज्य अमेरिका की समृद्धिशाली और सुदृढ़ता की नींव स्थापित की।** इस व्यक्तित्व का स्वामी था—अब्राहम लिंकन। यह एक ऐसा उदार विचारों वाला अमेरिकी था, जिसके व्यक्तित्व में बुद्धिमत्ता और संवेदनशीलता का अद्‌भुत संयोग था। **उसके पास ऐसी राजनीतिक दृष्टि थी, जो तत्कालीन समस्याओं को सही अर्थों में देखती और समझती थी।**

दास-प्रथा पर अमेरिकी राजनीतिक दलों की मान्यताएं—1858 ई. के सीनेट के चुनाव में लिंकन का मुख्य प्रतिद्वन्दी अनुभवी सीनेटर स्टीफेन ए. डगलस था। ये दोनों प्रतिद्वन्दी बहुत-से राजनीतिक गुणों से परिपूर्ण थे तथापि लिंकन एक विशेष प्रश्न अर्थात् दास प्रथा की समाप्ति पर, डगलस से एकदम अलग, स्पष्ट और अग्रगामी दृष्टिकोण रखता था। अपने चुनाव प्रचार के आरम्भ में ही लिंकन ने कहा—"**जो घर दो परस्पर विरोधी भागों में बंटा हो, वह टिक नहीं सकता। मेरा विश्वास है कि शासन, आधे लोगों को दास और आधे लोगों को स्वतन्त्र रखकर नहीं चल सकता। मैं यह नहीं कहता कि संघ का विघटन होगा या सदन नष्ट हो जाएगा, किन्तु मैं इसे विभाजित होने से रोकना चाहता हूं।**" इस प्रकार, लिंकन के विचार स्पष्ट रूप से दास-प्रथा के विरुद्ध थे। वह यह भी जानता था कि दास-प्रथा का वैधानिक रूप से अन्त होना, राष्ट्र के हित में है, परन्तु वह इस कुप्रथा का अन्त धीरे-धीरे योजनाबद्ध ढंग से करना चाहता था।

दास-प्रथा के प्रश्न पर लिंकन और डगलस के बीच 1858 ई. में आठ बार वाद-विवाद हुए। इन वार्तालापों के दौरान, दोनों उम्मीदवारों ने समकालीन समस्याओं पर अपने जो विचार रखे, उससे लोगों के सामने तस्वीर एकदम स्पष्ट हो गई। इस चुनाव में यद्यपि लिंकन की पराजय हुई तथापि इस समूचे दौर ने उसके विचारों को आम अमेरिकी जनता के समक्ष स्पष्ट कर दिया। **अब एक साधारण चेहरे और उदासीन भावों वाले इस अमेरिकी राजनीतिज्ञ से जनता भली-भांति परिचित हो चुकी थी।** लिंकन की स्पष्टवादिता, समस्याओं को समझने की उसकी दृष्टि, सादगीपूर्ण और सरल व्यवहार तथा उत्तरदायित्वपूर्ण सम्वेदनशीलता ने, उसे रिपब्लिकन पार्टी के सर्वमान्य नेता के तौर पर स्थापित कर दिया।

'दास प्रथा की समाप्ति' का प्रश्न, एक जटिल समस्या के रूप में उत्पन्न हो चुका था। स्थिति बहुत गम्भीर हो रही थी और उत्तरी तथा दक्षिणी राज्यों के विघटनकारी और अलगाववादी तत्वों ने इसे और दुष्कर बना दिया। 16 अक्टूबर, 1859 ई. को जॉन ब्राउन नामक एक दास-विरोधी व्यक्ति ने अपने कुछ सैनिकों को लेकर, हार्पर फेरी (उत्तरी वर्जीनिया) के संघीय शस्त्रागार पर अधिकार करने की असफल और धृष्टतापूर्ण चेष्टा की। अन्ततः वह पकड़ा गया और 2 दिसम्बर, 1859 ई. को फांसी पर लटका दिया गया। **इस सम्पूर्ण घटनाक्रम ने उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के बीच पनप रही शत्रुता की ज्वाला को और हवा प्रदान कर दी।** अब दोनों क्षेत्रों के मध्य एक ऐसा विषाक्त वातावरण बन गया, जिस पर नियन्त्रण पाना एक असम्भव-सा कार्य प्रतीत होने लगा। इससे परिस्थितियां और भी अधिक दुरूह हो गईं और अब यह निश्चित हो गया कि इन घटनाओं का सीधा प्रभाव, 1860 ई. में होने वाले राष्ट्रपति के चुनाव पर भी पड़ेगा।

राष्ट्रपति का चुनाव (1860 ई.)

अमेरिका के उत्तरी और दक्षिणी प्रान्तों के वैमनस्य का प्रभाव राजनीतिक क्षेत्र और दलों पर भी पड़ना आरम्भ हो चुका था। विशेषकर डेमोक्रेटिक दल के उत्तरी और दक्षिणी सदस्यों के बीच वैमनस्य इतना बढ़ चुका था कि वे राष्ट्रपति पद के लिए किसी एक नाम पर आम सहमति न बना सके। डेमोक्रेटिक दल के कुछ वरिष्ठ राजनीतिज्ञों ने इस बात के लिए भरसक प्रयत्न किए कि इस महत्वपूर्ण अवसर पर दल में फूट न पड़े, परन्तु वे अपने इस उद्देश्य में सफल न हो सके।

उत्तरी राज्यों ने डगलस को अपना प्रत्याशी घोषित किया। डेमोक्रेटिक दल में उत्तरी राज्यों के सदस्यों का बहुमत था तथापि वे डगलस की उम्मीदवारी के लिए आवश्यक दो-तिहाई बहुमत प्राप्त न कर सके। दूसरी तरफ, दक्षिणी राज्यों ने राष्ट्रपति पद के लिए केन्टकी के जॉन सी. ब्रेकेनरिज को और उप-राष्ट्रपति के पद के लिए ओरिगन के जोजेफ लेन को नामित किया। इस बीच एक नया राजनीतिक दल **'कॉन्स्टीट्यूशनल यूनाइटेड पार्टी'** भी अस्तित्व में आई। इस पार्टी ने टेनेसी के जान बेल और मैसाचुसेट्स के एडवर्ड एवरेट को क्रमशः राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार घोषित किया।

डेमोक्रेटिक दल के इस आपसी मतभेद का पूरा लाभ रिपब्लिकन पार्टी ने उठाया। **16 मई, 1860 ई. को शिकागो में हुए कन्वेंशन में रिपब्लिकन पार्टी ने सर्वानुमति से अब्राहम लिंकन को राष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार घोषित किया।** 1860 ई. के राष्ट्रपति के चुनाव में कुल निर्वाचन मतों में से लिंकन को 180, डगलस को 12, ब्रेंकिनरिज को 72 तथा बेल को 39 वोट मिले। इस प्रकार विभाजित विपक्ष की स्थिति से लाभ उठाकर, लिंकन असाधारण बहुमत से संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित हुए।

अब्राहम लिंकन का राष्ट्रपति पद पर निर्वाचन

नव-निर्वाचित राष्ट्रपति के लिए, देश की वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियां कांटों की सेज के समान थी। देश के दोनों प्रमुख भाग पूर्णतः एक-दूसरे के विरोधी थे और एक-दूसरे पर अपनी राय थोपना चाहते थे। परिस्थिति की गम्भीरता का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि जब लिंकन के निर्वाचन की सूचना चार्ल्सटन पहुंची, तो वहां के **'मरकरी'** नामक समाचार-पत्र के सम्पादक ने लिखा—**"चाय समुद्र में फेंक दी गई है, सन् 1860 की क्रान्ति आरम्भ हो गई है।" इस विकट परिस्थिति में भी, जैसा कि प्रो. टी. हेरी विलियम्स लिखते हैं—"लिंकन, अमेरिकी राष्ट्रीयता की सुरक्षा के लिए कृत संकल्प था। उसका व्यक्तित्व राष्ट्र निर्माण, बौद्धिक प्रार्थना और नैतिक गुणों का बहुत सुन्दर समन्वय था। समकालीन युग की आकांक्षा, लोकप्रिय विचारधारा और राजनीतिक चातुर्य से परिपूर्ण, लिंकन में वे सभी गुण विद्यमान थे, जो उद्देश्यों को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक होते हैं।"**[1]

दास-प्रथा पर लिंकन के विचार और दृष्टिकोण

इस समय सम्पूर्ण संयुक्त राज्य अमेरिका में भय, आशंका, अनिश्चितता और तनाव का वातावरण व्याप्त था। लिंकन का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य 'संघ का संरक्षण' करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह

1 "In its President the North had a leader who was determined to maintain American Nationality. Abraham Lincoln possessed the qualities of statesmanship intellectual and moral strength, a deep understanding of the spirit of his age and of political thought. Super political skill and the will to employ these qualities to accomplish his purpose."
—Prof. T. Herry Williams, *The New Cambridge History*, Vol. X, 1964.

आवश्यक था कि उत्तरी एवं दक्षिणी राज्यों के मध्य व्याप्त, गतिरोध और तनाव को समाप्त किया जाए। अपनी इस विचारधारा को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हुए लिंकन ने कहा—**''इस संघर्ष में मेरा परम लक्ष्य है—संघ का संरक्षण, न कि दास प्रथा का पोषण या उसका विनाश।''** उसका मत था कि दक्षिणी राज्यों में व्याप्त दास-प्रथा का धीरे-धीरे उन्मूलन होना चाहिए और उन्हें **'मफरूर दास नियम'** (Fugitive slave Act) का लाभ मिलना चाहिए।

दास-प्रथा पर लिंकन के विचारों को समझने से पहले, अमेरिका में इस प्रथा की विद्यमान स्थिति को समझना आवश्यक होगा। **दास-प्रथा की प्रासंगिकता को लेकर, अमेरिकी जनमत स्पष्ट रूप से दो भागों में विभाजित था।** इस विभाजन में अमेरिका की भौगोलिक विभिन्नताएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थीं। अमेरिका के दक्षिणी राज्य मुख्यतः कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था पर निर्भर थे। इस भाग में मुख्यतः कपास, तम्बाकू, चावल और गन्ना, आदि फसलों की खेती होती थी। दक्षिणी राज्यों के आर्थिक हित कृषि से सीधे तौर पर जुड़े हुए थे। वे अपने इस हित की पूर्ति दासों की सहायता से सुगमतापूर्वक कर रहे थे। इस प्रकार, दक्षिणी राज्यों की अर्थव्यवस्था के दो आधार स्तम्भ-कृषि और दास थे और वे इनमें कोई भी हस्तक्षेप स्वीकार करने के तीव्र विरोधी थे।

अमेरिका के उत्तरी राज्यों में कृषि अर्थव्यवस्था का स्थान औद्योगिक अर्थव्यवस्था ने ले लिया था। वहां बड़े पैमाने पर विशाल उद्योग फैले हुए थे। 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में उत्तरी राज्यों में अभूतपूर्व आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति हुई। इस सांस्कृतिक और बौद्धिक जागृति ने उत्तरी राज्यों के लोगों को अमानुषिक दास प्रथा का विरोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने क्षेत्र के साथ ही दक्षिणी राज्यों में विद्यमान दास-प्रथा की समाप्ति के लिए प्रयत्न करने आरम्भ कर दिए।

दूसरी तरफ दक्षिणी राज्य किसी भी दशा में दास प्रथा में कोई हस्तक्षेप नहीं चाहते थे, क्योंकि यह प्रश्न सीधे तौर पर उनके आर्थिक हितों से जुड़ा हुआ था। उनकी जिद और दासों की शोचनीय स्थिति के चलते यह प्रश्न बहुत ही जटिल होता जा रहा था। 1850 ई. की जनगणना के अनुसार लगभग 3,50,000 श्वेत दास स्वामियों के पास कुल मिलाकर 32,00,000 दास थे। इस प्रकार दक्षिणी राज्यों की कुल आबादी का लगभग एक-चौथाई भाग दासता की चक्की में पिस रहा था।

लिंकन, दास-प्रथा को अमानुषिक और मानव द्वारा मानव के शोषण पर आधारित प्रथा समझता था। वह रंगभेद पर आधारित किसी भी प्रकार के शोषण के विरुद्ध था, परन्तु वह दास-प्रथा का तीव्र और उग्र ढंग से उन्मूलन करने के पक्ष में नहीं था, जैसा कि उत्तरी राज्य चाहते थे। इस प्रश्न पर उसका दृष्टिकोण सुधारवादी था। वह दासता को पूर्णतः अनैतिक मानता था और इसको समाप्त करके, एक ऐसे अमेरिकी समाज की रचना करना चाहता था, जिसमें स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुता सही अर्थों में विद्यमान हो। इस कार्य के द्वारा ही अमेरिकी स्वतन्त्रता की घोषणा के उद्देश्यों को सही अर्थों में क्रियान्वित किया जा सकता था। लिंकन स्पष्ट रूप से यह बात समझता था कि लोकतन्त्र का आधारस्तम्भ मानव की समानता है। कोई भी आधुनिक समाज, ऐसी नींव पर आधारित नहीं हो सकता जिसके आधे मनुष्य स्वतन्त्र हों और आधे मनुष्य दासता में जकड़े हुए हों।

आरम्भ में लिंकन का यह स्पष्ट विचार था कि जिन दक्षिणी राज्यों में दास-प्रथा विद्यमान है, वहां धीरे-धीरे इस प्रथा को समाप्त करना चाहिए। वह जानता था कि यह प्रश्न, दक्षिणी राज्यों के आर्थिक हितों और झूठी प्रतिष्ठा से जुड़ा हुआ है और इस पर अचानक और कड़ा प्रहार किया गया तो स्थिति और भी अधिक दुरूह हो जाएगी। वस्तुतः लिंकन न तो एकाएक दास-प्रथा के तीव्र उन्मूलन के पक्ष में था और न ही **'मफरूर दास अधिनियम'** (Fugitive Slave Act) की समाप्ति के पक्ष में था। उसका मत यह था कि जहां भी दास-प्रथा विद्यमान है, वहां के दासों को जीवन, स्वतन्त्रता और आर्थिक लाभ मिलने चाहिए, क्योंकि यह **'अमेरिकी स्वतन्त्रता की घोषणा'** की मूल भावना में अन्तर्निहित है। इसीलिए वह इस महत्वपूर्ण प्रश्न को आरम्भ में राज्यों के विवेक पर छोड़ना चाहता था, परन्तु जब गृहयुद्ध आरम्भ हो गया और फैलने लगा तो लिंकन ने यह अनुभव किया कि अब दास-प्रथा की समाप्ति का निर्णय राष्ट्र को ही लेना होगा।

गृह-युद्ध का आरम्भ

अभी अब्राहम लिंकन ने राष्ट्रपति पद की शपथ भी नहीं ली थी कि इससे पहले ही दक्षिणी राज्यों में पृथकतावादी हलचलें अत्यन्त तीव्र हो गई थीं। इन पृथकतावादी राज्यों का मत था कि चूंकि संयुक्त राज्य

अमेरिका, स्वतन्त्र सम्प्रभु राज्यों की स्वेच्छा से बना एक संघ राष्ट्र है। अतः यदि किसी राज्य की इच्छा संघ में न रहने की है तो वह अपनी इच्छा से संघ से अलग हो सकता है। इस दिशा में पहल दक्षिणी राज्य कैरोलिना ने की। उसने सितम्बर 1860 ई. में संघ से पृथक् होने का निर्णय कर लिया। कैरोलिना राज्य के इस निर्णय के बाद, दक्षिण के अन्य पृथकतावादी राज्य भी संघ से अलग होने के लिए प्रेरित होने लगे। परिणामतः 1861 ई. के अन्त तक मिसीसिपी, अलबामा, जार्जिया, फ्लोरिडा, टेक्सास और लूसियाना जैसे कुल सात राज्यों ने संघ से अलग होने का निर्णय ले लिया।

संघ से पृथक् हुए सात दक्षिणी राज्यों ने **'कनफेडरेशन ऑफ अमेरिका'** के नाम से एक नए परिसंघ का निर्माण कर लिया। इस परिसंघ के लिए अलग राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, कांग्रेस, आदि की व्यवस्था की गई। परिसंघ के राष्ट्रपति के पद पर जैफरसन डेविड और उपराष्ट्रपति पद पर अलेक्जेण्डर स्टीफेन्स को चुना गया। इस प्रकार, राष्ट्रपति के पद के ग्रहण के पूर्व ही एक अत्यन्त गम्भीर समस्या लिंकन के समक्ष उपस्थित थी।

लिंकन द्वारा राष्ट्रपति पद की शपथ

अब्राहम लिंकन ने 4 मार्च, 1861 ई. को राष्ट्रपति पद की शपथ ली। वह प्रत्येक स्तर पर संघ की एकता चाहता था और असन्तुष्टों से वार्तालाप के आधार पर समस्याओं का समाधान करना चाहता था। उसने असन्तुष्टों से स्पष्ट रूप से अपील की कि जब तक वे सशस्त्र विद्रोह नहीं करेंगे, तब तक संघ उनके विरुद्ध सशस्त्र कार्यवाही नहीं करेगा, परन्तु ऐसा **'संघ की एकता'** की कीमत पर नहीं होगा, परन्तु उसकी इस अपील का दक्षिणी परिसंघ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वे अपनी झूठी शक्ति और दम्भ पर अभी भी टिके हुए थे।

फोर्ट समटर पर दक्षिणी संघ का आक्रमण

चार्ल्सटन में स्थित समटर का किला, संघ की सामरिक सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण था। यहां पर संघीय सेना के मेजर एण्डरसन की सेना को आवश्यक रसद एवं अन्य सामानों की आवश्यकता थी। इनकी कमी में यह किला परिसंघ की सेनाओं का सामना नहीं कर सकता था। **अतः लिंकन ने 6 अप्रैल, 1861 ई. को समटर के किले की सहायता के लिए नौ-सेना भेजने का निश्चय किया।** अब दक्षिणी परिसंघ को तुरन्त निर्णय लेना था, जो अत्यन्त कठिन कार्य था। परिसंघ ने मेजर एण्डरसन को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। परिणामतः परिसंघ की सेनाओं ने 12 अप्रैल, 1861 ई. को समटर के किले पर बमबारी आरम्भ कर दी। अतः विवश होकर एण्डरसन ने 14 अप्रैल को आत्मसमर्पण कर दिया।

लिंकन किसी भी कीमत पर समटर के किले की रक्षा करना चाहता था। वह यह जानता था कि यदि संघ को सुरक्षित और अखण्डित रखना है तो किले को वापस प्राप्त करना ही होगा। परिणामतः अपने कुछ मन्त्रियों के इच्छा के विरुद्ध भी, उसने समटर की सहायता के लिए रसद और अन्य सामग्री भेज दी। अब एक ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी, जिसमें सारा राष्ट्र लिंकन के पीछे खड़ा था। अब सबसे प्रमुख कार्य संघ और राष्ट्र की सुरक्षा करना था और इस कार्य को लिंकन ही मूर्त रूप दे सकता था। लिंकन ने अपने उत्तरदायित्व पर सेना में 75,000 स्वयंसेवकों को भर्ती किया। इन स्वयंसेवकों को दक्षिणी परिसंघ के तटों की नाकेबन्दी का आदेश दिया गया। इस प्रकार अब दोनों पक्षों की ओर से युद्ध का सिंहनाद हो चुका था।

राज्यों का बंटवारा

युद्ध की इस परिस्थिति में, सबसे पहले उन आठ राज्यों को निर्णय लेना था, जो अभी भी अनिश्चय की स्थिति में थे। अब वह समय आ गया था कि वे संघ या परिसंघ में से किसी एक में रहने का निर्णय करें। **इस परिस्थिति में चार दास राज्यों—वर्जीनिया, आरकन्सास, टेनेसी और उत्तरी कैरोलिना ने दक्षिणी परिसंघ में सम्मिलित होने का निर्णय लिया।** शेष चार राज्यों—मिसौरी, मेरीलैण्ड, केंटकी और डेलावेयर ने पुराने संघ में ही बने रहने का निर्णय लिया। इस प्रकार राज्यों एवं उसमें रहने वाले लोगों का बंटवारा पूरा हो गया। उत्तरी संघ में 19 राज्य थे, जिनमें लगभग दो करोड़ जनसंख्या निवास करती थी। चार सीमान्त राज्यों की जनसंख्या लगभग 30 लाख थी। दक्षिणी परिसंघ के 11 राज्यों की कुल जनसंख्या लगभग एक करोड़ थी, जिसमें 35 लाख दास थे। उत्तरी संघ की सेना में जहां 20 लाख सैनिक थे, वहीं दूसरी ओर दक्षिणी परिसंघ की सेना में मात्र 8 लाख सैनिक थे। फिर भी, दक्षिणी परिसंघ अपने को किसी भी प्रकार से कमजोर नहीं समझता था और अपनी जीत के प्रति पूर्णतः आश्वस्त था।

युद्ध से सम्बन्धित संसाधनों का तुलनात्मक विवरण

उत्तरी संघ, युद्ध से सम्बन्धित संसाधनों की दृष्टि से अधिक सम्पन्न और व्यवस्थित था। संघ के शासन को ही विदेशी राष्ट्रों से वैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त थी। **लिंकन ने कूटनीतिपूर्वक विदेशों से यथासम्भव अच्छे सम्बन्ध बनाए रखे और गृहयुद्ध में विदेशी हस्तक्षेप नहीं होने दिया।** उसकी यह दूरदर्शितापूर्ण नीति इंग्लैण्ड और फ्रांस के सन्दर्भ में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई। आर्थिक संसाधनों की दृष्टि से तो उत्तरी संघ, दक्षिणी परिसंघ से कहीं अधिक समृद्ध था। वहां की औद्योगिक अर्थव्यवस्था, दक्षिण की कृषि अर्थव्यवस्था से प्रत्येक दृष्टि में समृद्ध और सुदृढ़ थी। इस प्रकार राजनीतिक, आर्थिक, सैनिक और कूटनीतिक युद्ध से सम्बन्धित इन सभी क्षेत्रों में संघ की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक मजबूत थी।

दक्षिणी परिसंघ के पक्ष में सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि उसे युद्ध अपनी भूमि पर ही लड़ना था। सैन्य कुशलता की दृष्टि से यह क्षेत्र आरम्भ से ही आगे था। अतः उसके पास श्रेष्ठ और अनुभवी सेनाओं की सेवाएं उपलब्ध थीं। **यहां की भौगोलिक परिस्थितियों के चलते, सामान्य नागरिक भी शारीरिक दृष्टि से अधिक मजबूत होते थे।** अतः आवश्यकता पड़ने पर उन्हें कम समय में ही प्रशिक्षित करके सेना में भर्ती किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त, दक्षिणी परिसंघ को सबसे अधिक गर्व अपने 'कपास के खजाने' पर था। वे इस अनुमान से प्रसन्न थे कि इसी कपास की प्राप्ति के प्रलोभन में इंग्लैण्ड भी उनका समर्थन करेगा, परन्तु यह दिवास्वप्न, व्यावहारिक रूप न ले सका और जैसे-जैसे युद्ध बढ़ता गया, परिसंघ को अपनी कमजोरियों का पता चलता गया।

प्रत्यक्ष संघर्ष का आरम्भ

संघ और परिसंघ की सेनाओं में पहला प्रत्यक्ष संघर्ष, उत्तरी वर्जीनिया में स्थित बुलरन नामक स्थान पर जुलाई 1861 ई. में आरम्भ हुआ। इस समय संघ की सेना का नेतृत्व जनरल इरवीन मेकडॉवेल और दक्षिणी परिसंघ की सेना का नेतृत्व जनरल ब्यूरीगार्ड पर रहा था। दोनों ही सेनाओं के सैनिक नए भर्ती हुए थे और उनमें युद्ध के लिए आवश्यक अनुभव का अभाव था। इस **युद्ध में परिसंघ की सेनाओं ने संघ की सेना को कड़ी टक्कर दी।** परिणामतः संघ की सेना को पीछे हटना पड़ा। इस युद्ध का कोई महत्वपूर्ण परिणाम तो नहीं निकला तथापि उत्तरी संघ को यह बात स्पष्ट रूप से ज्ञात हो गई कि यह संघर्ष लम्बा खिंचेगा और इसका परिणाम कड़े संघर्ष के बाद ही प्राप्त होगा।

लिंकन, संघर्ष के विस्तार और तीव्रता से भली-भांति परिचित हो रहा था। वह तीव्रता से सैन्य-कार्यवाही करना चाहता था और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने जनरल मैकलालन को सम्पूर्ण संघीय सेना का कमाण्डर-इन-चीफ बना दिया। लिंकन की योजना यह थी कि सीमावर्ती राज्यों को अपने प्रभाव में लाया जाए और परिसंघ के दक्षिणी बन्दरगाहों की नौ-सैनिक किलेबन्दी की जाए। अतः उसने मार्च 1862 ई. में संघीय सेना को आगे बढ़ने का आदेश दिया।

पश्चिम में युद्ध का आरम्भ (1862 ई.)

1862 ई. का वर्ष, दोनों पक्षों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ और गृहयुद्ध एक निर्णयात्मक स्थिति में पहुंच गया। संघीय सेना के कमाण्डर-इन-चीफ जनरल मैकलालन ने पश्चिम में मिसीसिपी रेखा पर अपना नियन्त्रण स्थापित करने की योजना बनाई। **उसकी इस योजना को लिंकन ने भी अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी।** अप्रैल 1862 ई. में दक्षिणी परिसंघ की सेनाओं ने शिलोह (Shilloh) पर अचानक आक्रमण कर दिया। अचानक हुए इस आक्रमण का सामना करने के लिए संघीय सेना का नेतृत्वकर्ता यू. एस. ग्रान्ट तैयार नहीं था। तथापि उसने इस प्रतिकूल स्थिति को सम्भाला तथा परिसंघ की सेना पर आक्रमण करके, उसने सेनापति ब्यूरीगार्ड को पराजित कर दिया। परिणामतः ब्यूरीगार्ड को कोरिन्थ (Corinth) वापस लौटना पड़ा। संघीय सेना के लिए यह विजय बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। इसके कुछ महीने के बाद, संघीय सेना ने मिसीसिपी के बहुत बड़े भाग पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया।

संघीय सेना की इस विजय से दक्षिण की अपराजेयता का दम्भ भी टूट गया। स्वयं राष्ट्रपति लिंकन इस विजय के नेतृत्वकर्ता ग्रांण्ट से बहुत अधिक प्रभावित हुआ। **इस विजय से पूरे उत्तरी क्षेत्र में उत्साह का वातावरण बन चुका था।** परन्तु इस युद्ध में संघीय सेना को भी कुछ कम हानि नहीं उठानी पड़ी और यहां

तक कि लिंकन के कुछ राजनीतिक विरोधियों ने ग्राण्ट की युद्ध योजना पर प्रश्नचिह्न भी लगाया, तथापि कुल मिलाकर इस समय युद्ध की स्थितियां उत्तरी संघ के लिए अधिक अनुकूल थीं।

पूर्व में युद्ध का आरम्भ (1862 ई.)

संघीय सेना के लिए पूर्व में युद्ध की स्थिति पर नियन्त्रण स्थापित करना अपेक्षाकृत अधिक कठिन कार्य था। उनकी योजना यह थी कि जनरल मैकडॉवेल के नेतृत्व में संघीय सेना, वर्जीनिया पर उत्तर की ओर से आक्रमण करेगी। इस योजना को मूर्त रूप भी प्रदान किया गया। **परन्तु दक्षिणी परिसंघ के योग्य सेनापति 'स्टोनवाल जैक्सन' ने संघ की सेना की प्रगति को रोक दिया।** जैक्सन ने **शेनान डीह घाटी** (Shenan Deah Valley) पर आक्रमण कर दिया और इसके बाद संघीय सेना के कमाण्डर-इन-चीफ मैकलालन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। जैक्सन के आक्रमण के चलते मैकलालन को पीछे हटना पड़ा तथापि वह पराजित नहीं हुआ। इसके बाद, मैकलालन को सरकार की ओर से यह निर्देश मिला कि वह अपनी सेना के साथ वापस वाशिंगटन लौट आए।

उत्तरी संघ की सेना के संगठन में शीर्ष नेतृत्व के स्तर पर कई महत्वपूर्ण फेरबदल किए गए। दूसरी तरफ परिसंघ की सेना इस समय रिचमाण्ड की सुरक्षा के प्रति निश्चिन्त हो गई थी। अब परिसंघ के मुख्य सेनापति राबर्ट ई. ली ने **'मेनासॉस के युद्ध'** में संघीय सेनापति जॉन पोप को पराजित कर दिया। इसके बाद 'ली' ने मेरीलैण्ड की जीतने की योजना बनाई, जिसके तहत उसने पेंसिलवेनिया पर आक्रमण कर दिया और अटलाण्टिक तट और पश्चिम के मध्य स्थित रेल सम्पर्कों को भंग कर दिया।

उत्तरी संघ के लिए युद्ध की स्थितियां बहुत प्रतिकूल हो रही थीं। **इस विषम परिस्थिति में लिंकन ने सेना की बागडोर एक बार फिर मैकलॉलन को सौंपी।** 17 सितम्बर, 1862 ई. को एन्टीटाम नामक स्थान पर मैकलालन और ली की सेनाओं के बीच संघर्ष हुआ, परन्तु इसका कोई परिणाम नहीं निकला। इस संघर्ष में ली की सेनाओं को काफी क्षति पहुंची और उसे वर्जीनिया वापस लौटना पड़ा। मैकलॉलन ने ली की वापस लौटती हुई सेना पर पीछे से आक्रमण नहीं किया। **अतः संघीय नेतृत्व ने यह समझा कि वह युद्ध करने को इच्छुक नहीं है।** परिणामतः मैकलालन को सदैव के लिए पदच्युत कर दिया गया। दूसरी तरफ, ली के नेतृत्व में परिसंघीय सेना ने कई उल्लेखनीय सफलताएं अर्जित कीं। अब उत्तरी संघ के लिए परिस्थितियां बहुत विषम हो चुकी थीं। अब आवश्यकता इस बात की थी कि कुछ महत्वपूर्ण निर्णायक कदम संघीय नेतृत्व द्वारा उठाए जाएं।

दास-मुक्ति की घोषणा (सितम्बर 1862 ई.)

'एण्टीटाम के युद्ध' के बाद 22 सितम्बर, 1862 ई. को लिंकन ने सर्वोच्च सेनापति के अधिकार से यह घोषणा की कि 1 जनवरी, 1863 ई. से सभी दास स्वतन्त्र कर दिए जाएंगे। इस घोषणा का पहला तात्कालिक सकारात्मक परिणाम यह निकला कि लगभग 1,50,000 स्वतन्त्र दांस संघीय सेना में भर्ती हो गए। दूसरा सकारात्मक परिणाम यह हुआ कि विश्व जनमत में दास-मुक्ति घोषणा का अच्छा प्रभाव पड़ा और इसका उपयोग उत्तरी संघ के लिए नैतिक समर्थन प्राप्त करने में किया गया। **कुल मिलाकर, लिंकन के इस निर्णय ने संघ को सुदृढ़ता ही प्रदान की।** जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि लिंकन का सबसे प्रधान उद्देश्य 'संघ का संरक्षण' ही था। दासों की मुक्ति का प्रश्न उसके लिए सदैव दूसरे स्थान पर ही रहा। इसी भावना को व्यक्त करते हुए उसने 1862 ई. में होरेश ग्रीली को एक पत्र में लिखा था—**"इस युद्ध में मैं केवल इस उद्देश्य से प्रवेश कर रहा हूं कि संघ बचा रहे। दासों की मुक्ति या दास व्यापार में मुझे कोई विशेष रुचि नहीं है। यदि मैं किसी दास को मुक्त किए बिना संघ को बचा सका तो मैं संघ को बचाऊंगा। यदि मैं सब दासों को मुक्त करके संघ को बचा सका तो भी मैं संघ को बचाऊंगा।"**

युद्ध का निर्णायक चरण में प्रवेश

मई 1863 ई. में दक्षिणी परिसंघ के सेनापति जनरल ली ने संघीय सेना के जनरल हुकर को चान्सलरवेल नामक स्थान पर बुरी तरह पराजित कर दिया। अब लिंकन ने जनरल जार्ज सी. मीड को संघीय सेना का नेतृत्व सौंपा। जून 1863 ई. के अन्त तक परिसंघ की सेनाएं पेंसिलवेनिया तक पहुंच गईं। दोनों सेनाओं के मध्य, 1 जुलाई से 3 जुलाई तक गैट्सबर्ग का युद्ध हुआ। गैट्सबर्ग का युद्ध, एक निर्णायक संघर्ष था। इस युद्ध के आरम्भ में परिसंघ की सेना की स्थिति काफी मजबूत थी, परन्तु अचानक युद्ध की बाजी पलटी और संघीय सेनापति जनरल मीड ने इस युद्ध को जीत लिया। इस निर्णायक पराजय से परिसंघ की सेना में भगदड़ मच गई। **नैतिक और मानसिक तौर पर जहां दक्षिणी परिसंघ हताश था, वहीं दूसरी ओर इस विजय को प्राप्त करने के बाद उत्तरी संघ आत्मविश्वास से परिपूर्ण था।** इसके बाद संघीय सेना ने 4 जुलाई, 1863 ई. को जनरल

ग्राण्ट के नेतृत्व में विक्सबर्ग पर अधिकार कर लिया और दक्षिणी परिसंघ को दो भागों में विभाजित कर दिया।

इस अति महत्वपूर्ण विजय को प्राप्त करने के बाद संघीय सेना ने 9 सितम्बर, 1863 ई. को चट्टनूगा शहर पर अधिकार कर लिया। अब लिंकन ने संघीय सेना के मुख्य सेनापति के पद पर जनरल ग्राण्ट की नियुक्ति की। **जनरल ग्राण्ट ने परिसंघ के सेनापति जनरल ब्राग को पूर्णरूपेण पराजित कर दिया।** दूसरी तरफ, पश्चिम में संघीय सेना के मुख्य सेनानायक विलियन टी. शर्मन ने 2 सितम्बर, 1863 ई. को अटलांटा पर अधिकार कर लिया। इसके बाद, शर्मन परिसंघीय क्षेत्र को रौंदता हुआ, उत्तर में जनरल ग्राण्ट की सेना से जा मिला। उसने जिस तरह से कूच किया, उसका मनोवैज्ञानिक दबाव दक्षिणी राज्यों की जनता पर भी पड़ा। अब दक्षिणी लोग अपनी सम्भावित पराजय की भावना से बुरी तरह भयभीत थे।

संघ की विजय और परिसंघ का आत्मसमर्पण

मार्च 1865 ई. में संघीय सेनापति जनरल ग्राण्ट ने पीटर्सबर्ग में परिसंघ के मुख्य सेनापति ली को पराजित किया और रिचमाण्ड तथा पीटर्सबर्ग को अपने नियन्त्रण में ले लिया। ली के समक्ष बहुत विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई थी। उसके पास केवल 30,000 सैनिक थे, जो मानसिक तौर पर अपनी पराजय स्वीकार कर चुके थे। जनरल ली के समक्ष आत्मसमर्पण के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग शेष नहीं बचा था, अतः उसने 9 अप्रैल, 1865 ई. को संघीय सेनापति ग्राण्ट के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। दूसरी तरफ, जैक्सन ने भी शर्मन के समक्ष समर्पण कर दिया। 10 मई, 1865 ई. को दक्षिणी परिसंघ के राष्ट्रपति डेविस को पकड़ लिया गया। **अब गृहयुद्ध समाप्त हो चुका था। उत्तरी संघ की विजय हुई तथापि दक्षिणी परिसंघ के साथ उदारतापूर्ण व्यवहार करने का आश्वासन लिंकन ने दिया।** लिंकन अपने सर्वोच्च उद्देश्य 'संघ का संरक्षण' को प्राप्त कर चुका था, अब इस संघ को सुदृढ़ता और स्थायित्व प्रदान करना प्रमुख उद्देश्य था। विघटनकारी और अलगाववादी तत्व सदैव के लिए समाप्त हो चुके थे। फिर भी पराजित राज्यों के लोगों के साथ कठोर व्यवहार नहीं किया गया। उत्तरी संघ के मुख्य सेनापति जनरल ग्राण्ट ने अपने अति उत्साही सैनिकों को चेतावनी के लहजे में कहा—"युद्ध समाप्त हो गया है, विद्रोही पुनः हमारे देशवासी बन गए हैं।"

लिंकन का राष्ट्रपति पद पर पुनर्निर्वाचन

गृहयुद्ध के निर्णायक दौर में उत्तरी संघ की सफलताओं का परिणाम वहां की राजनीतिक स्थिति पर भी पड़ा। अब जहां डेमोक्रेटिक दल, अन्धकार के युग में प्रवेश कर गया, वहीं दूसरी ओर रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार के रूप में लिंकन 1864 ई. में पुनः संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति पद के लिए पुनर्निर्वाचित हुए। 4 **मार्च, 1865 ई. को लिंकन ने राष्ट्रपति के रूप में दूसरा कार्यकाल आरम्भ किया।** इस अवसर पर लिंकन ने जो भाषण दिया, वह उसके उदार और निष्कपट प्रवृत्ति की स्पष्ट अभिव्यक्ति था। उसने युद्ध में शहीद सैनिकों, उनकी विधवाओं और बेसहारा बच्चों के पुनर्स्थापना के लिए कड़ी मेहनत करने की बात की। उसने कहा कि अब प्रतिशोध की ज्वाला को शान्त करने की आवश्यकता है तथा शान्ति और समृद्धि के साथ राष्ट्र को विकास के पथ पर अग्रसर करने का अवसर आ चुका था।

लिंकन की हत्या

9

12 अप्रैल, 1865 ई. को परिसंघ के सेनापति जनरल ली ने आत्मसमर्पण किया, तो समस्त वाशिंगटन में उत्साह की लहर दौड़ पड़ी। इस अवसर पर 14 अप्रैल, 1865 ई. की रात में वाशिंगटन के फोर्ड थियेटर में लिंकन सपत्नीक नाटक देखने पहुंचा। नाटक को देखने के उपक्रम के दौरान ही एक अर्द्धविक्षिप्त कलाकार जॉन विक्स बूथ द्वारा गोली मारकर लिंकन की हत्या कर दी गई।

अमेरिकी इतिहास में लिंकन का स्थान

संयुक्त राज्य अमेरिका के महानतम राष्ट्रपतियों की शृंखला में अब्राहम लिंकन एक विलक्षण कड़ी के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जब उसने अपने राजनीतिक जीवन का आरम्भ किया था, तो किसी को भी यह आशा न थी कि इलिनाय का यह एक साधारण-सा वकील, संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति पद को सुशोभित करेगा। वह भी ऐसे अवसर पर जब राष्ट्र सर्वाधिक संकटग्रस्त स्थिति में था। यदि उसके स्थान पर कोई अन्य व्यक्ति होता तो यह सम्भव था कि वह इन जटिल समस्याओं के घेरे में उलझ कर रह जाता, परन्तु लिंकन ने इस विषम परिस्थितियों में भी दृढ़ नीति का अवलम्बन किया और जैसे-जैसे युद्ध बढ़ता गया,

वैसे-वैसे लिंकन की दृढ़ता, निर्णय लेने की स्पष्टता और अपने निर्णयों को क्रियान्वित कराने की क्षमता भी प्रखर रूप से प्रकट होने लगी।

जब लिंकन राष्ट्रपति पद पर आसीन हुआ, तो उस समय उसके पास कोई विशेष राजनीतिक अनुभव नहीं था। पूरा राष्ट्र समस्याओं और उलझनों से घिरा हुआ था। उसे ऐसे अप्रिय और जोखिम भरे निर्णय लेने पड़े, जिनसे या तो राष्ट्र का उत्थान होता या वह पतन के गर्त में चला जाता, **परन्तु लिंकन तो एक अलग मिट्टी से ही बना हुआ व्यक्ति था। उसके अन्दर जो सबसे बड़ी विशेषता थी, वह थी निर्णय लेने की क्षमता, उनको क्रियान्वित करने की दृढ़ इच्छाशक्ति और राष्ट्र तथा परिस्थितियों के अनुकूल निर्णयों को बदलने का साहस था।** यह एक ऐसा विशेष गुण था, जो यदि किसी राष्ट्राध्यक्ष में सही अर्थों में विद्यमान हो, तो वह महान बन जाता है। लिंकन की महानता में उसके व्यक्तित्व के इन्हीं गुणों ने सबसे प्रमुख भूमिका निभाई थी।

लिंकन ने गृहयुद्ध में उत्तरी संघ की सफलताओं के दौर से ही यह कहना आरम्भ कर दिया था कि युद्ध के पश्चात् देश का पुनर्निर्माण, उदार और प्रज्ञायुक्त दृष्टिकोण के साथ किया जाएगा, न कि बदले की भावना के साथ। यद्यपि वह पुनर्निर्माण की अपनी योजनाओं को मूर्त रूप न दे सका और असमय ही मृत्यु को प्राप्त हो गया, तथापि संघ के संरक्षण और संविधान की सर्वोच्चता को स्थापित करने में लिंकन ने जो योगदान दिया, उसके लिए अमेरिकी जनता सदैव उसकी ऋणी रहेगी।